

Department of HistoryGobardanga  
Hindu CollegeGE/ DSC Core Course - 4

4Th semester

# आर्य समाज

आर्य समाज (Sanskrit: आर्य समाज, इंग्रेजि: ārya samāja "Noble Society") वैदिक धर्म प्रतिष्ठार जन्य स्वामी दयानन्द कर्तृक १८९५ साले प्रतिष्ठित एकटि हिन्दु संगठन ओ संस्कार आन्दोलन।[२] तनि एकजन वेद प्रचारक सन्यासी छिलेन। तनि ब्रह्मचर्य पालन करतेन। ई आदर्शे उपर जोर दिऐछिलेन। आर्य समाजेर सदस्यगण ई नीतिई मेने चलेन। तारा एकेश्वरबादे विश्वासी अर्थां तारा एक ईश्वरे विश्वासी एवं मूर्तिपूजार विरोधी।[७] तादेर विश्वास वेदोक्त ब्रह्मेर उपर ।

१८७९ थेके १८९७ एर मध्ये स्वामी दयानन्द सरस्वती भारते तार प्रथम संस्कार प्रचेष्टा चालान। ई प्रचेष्टा छिल मूलत "वैदिक विद्यालय" वा "गुरुकुल" स्थापनेर लक्ष्ये या शिक्षार्थीदेर वैदिक ज्ञान, संस्कृति ओ धर्म सम्पर्के गुरुत्व प्रदान करे। प्रथम विद्यालयटि १८७९ साले फररुखाबादे प्रतिष्ठित ह्य मात्र ५० जन शिक्षार्थीदेर निऐ। प्रारम्भिक साफल्येर दरुन मिर्जापुर(१८९०), कासगञ्ज (१८९०), चालिसार (आलीगढ़) (१८९०) एवं वाराणसी (१८९७)-ते द्रुत बेश किछु विद्यालय स्थापित ह्य। वैदिक विद्यालय समूह मूलत स्वामी दयानन्देर सामाजिक ओ धर्मीय संस्कारेर प्रायोगिक प्रयासकेई तुले

ধরে। সেগুলো মিশ্র প্রতিক্রিয়া পেয়েছিল। একদিকে শিক্ষার্থীরা বিদ্যালয়ে ঐতিহ্যগত মূর্তিপূজা করতে পারত না, বরং তাদের প্রতিদিন দুবার সন্ধ্যা বন্দনা ও অগ্নিহোত্র যজ্ঞ করতে হত। তারা ছিল শৃঙ্খলাবদ্ধ। অন্যদিকে তাদের সমস্ত খাবার, বাসা, পোশাক এবং বই বিনামূল্যে দেয়া হত এবং অ-ব্রাহ্মণরাও সংস্কৃত পাঠ করতে পারত। তাদেরকে প্রধানত বেদ শিক্ষা দেয়া হত। বৈদিক বিদ্যালয়সমূহ দ্রুতই বেশ কিছু সমস্যার সম্মুখীন হয়।

আর্য সমাজ মূলত স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী প্রবর্তিত দশটি নিয়মের উপর প্রতিষ্ঠিত। নিয়মগুলি হল:

১. সব সত্যবিদ্যা এবং যা পদার্থবিদ্যা দ্বারা জানা যায় সেসবের আদিমূল পরমেশ্বর।
২. ঈশ্বর সচ্চিদানন্দস্বরূপ, নিরাকার, সর্বশক্তিমান, ন্যায়কারী, দয়ালু, অজন্মা, অনন্ত, নির্বিকার, অনাদি, অণুপম, সর্বাধার, সর্বেশ্বর সর্বব্যাপক, সর্বান্তর্যামী, অজর, অমর, অভয়, নিত্য, পবিত্র ও সৃষ্টিকর্তা, একমাত্র তারই উপসনা করা উচিত।
৩. বেদ সব সত্যবিদ্যার পুস্তক, বেদের পঠন-পাঠন, শ্রবণ ও শ্রাবণ সবল আর্যের পরম ধর্ম।
৪. সত্য গ্রহণে ও অসত্য পরিত্যাগে সদা উদ্যত থাকবে।
৫. সব কাজ ধর্মানুসারে অর্থাৎ সত্য ও অসত্য বিচারপূর্বক করা উচিত।
৬. সংসারের উপকার করা এই সমাজের মুখ্য উদ্দেশ্য অর্থাৎ শারীরিক, আত্মিক ও সামাজিক উন্নতি করা।

৭. সকলের সঙ্গে প্রীতিপূর্বক ধর্মানুসারে যথাযোগ্য ব্যবহার করা উচিত।

৮. অবিদ্যার নাশ ও বিদ্যার বৃদ্ধি করা উচিত।

৯. প্রত্যেককে নিজের উন্নতিতেই সন্তুষ্ট থাকা উচিত নয়, কিন্তু সবার উন্নতিতে নিজের উন্নতি ভাবা উচিত।

১০. সব মানুষকে সামাজিক সর্বহিতকারী নিয়ম পালনে পরতন্ত্র এবং প্রত্যেক হিতকারী নিয়মে সবাইকে স্বতন্ত্র থাকা উচিত।

**সমাপ্ত**